25-8-11 ओम् शान्ति मधुबन

दादी प्रकाशमणि जी के चौथे पुण्य स्मृति दिवस पर बापदादा को भोग तथा वतन का सन्देश

– गुल्जार दादी

आज दादी गुल्जार जब बापदादा के पास वतन में भोग लेकर गई तो दादी जी स्वयं सभी से नयन मुलाकात करने के लिए सभा में पधारी और बहुत समय तक हाथ हिलाकर सभी में मिलन मनाया फिर अपने मधुर महावाक्य उच्चारण करते हुए कहा कि

ओम शान्ति। अभी चारों ओर संकल्प करते हो लेकिन संकल्प में दृढ़ता की कमी है। दृढ़ संकल्प सफलता की चाबी है। तो बापदादा ने भी कहा है कि अभी जो भी आये हैं सभी को यह संकल्प करना है कि दृढ़ता से सफलता हुई पड़ी है। तो दृढ़ता शब्द को ज्यादा अटेन्शन दो। प्लैन अच्छे बनाते हो, बापदादा भी खुश हो जाता है। हम भी जब वतन में आते हैं तो समाचार बापदादा सुनाते हैं, खुशी भी होती है लेकिन... अभी यह लेकिन समाप्त करो। ब्राह्मणों का संकल्प कमाल करने वाला है लेकिन संकल्प के बाद अलबेले हो जाते हैं। तो बहुत अच्छा लग रहा है, सब तरफ के बापदादा तो कहेंगे महारथी आये हैं, जो करने चाहो वह कर सकते हो। अभी समय को समीप लाओ।

(5 हजार टीचर्स आई हैं, वह आपसे ऐसी प्रेरणा चाहती हैं जो वह उनके लिए खजाना बन जाए)

अमृतवेले ही सिर्फ दृढ़ संकल्प करो, आज इस संकल्प को जो बाप कह रहा है, उसको पूर्ण करना ही है। करना ही, ही शब्द को अण्डरलाइन करो। पुरुषार्थ सब करते हो, हमें भी बापदादा रोज़ चार बजे वतन में बुलाते हैं। हम सब इकट्ठे होते हैं और हम भी प्लैन बनाते हैं। अभी थोड़ा तीव्र करो।

(पीस आफ माइन्ड चैनल आज सारे विश्व के लिए लांच हो रहा है, उसके लिए आपकी प्रेरणायें)

उसके लिए अपने संकल्प शक्ति को इतना कल्याणकारी बनाओ जो आत्माओं को आपके कल्याणकारी संकल्प पहुंचें और वह अनुभव करें कोई हमको प्रेर रहा है कि अब परिवर्तन करो, परिवर्तन करो, परिवर्तन करो।

(खुशखबरी, विशाखापटनम् की गीतम युनिवर्सिटी की तरफ से दादी जानकी जी को डाक्ट्रैक्ट की उपाधि मिली है, यह हमारे विद्यालय के लिए बहुत गौरव की बात है) अच्छा है।

अभी दृढ़ता शब्द को सदा याद रखना।

(प्लैटेनिम जुबली की लांचिंग दिल्ली ओ.आर.सी में होने वाली है)

अच्छा है, यह तो कर रहे हो और करते रहना लेकिन समय को समीप लाओ। अभी सबके अन्दर वैराग्य की मात्रा इमर्ज हो। जो भी यह पाप कर्म होते हैं उससे वैराग्य की भावना दिल में उत्पन्न हो। अच्छा।

(दादी जी विदाई ले वतन में गई और दादी गुल्जार ने बापदादा का मधुर सन्देश सुनाया)

आज हम आप सबसे मिलते हुए वतन में पहुंची। तो वतन में बाबा ने एडवांस पार्टी को अपने पास बुलाया था और उसमें भी मुख्य तीन दादियां, दादी, दीदी और चन्द्रमणि दादी, यह तीन जो हैं वह बाबा के सामने बैठी थी और बाबा इन्हों से पूछ रहा था कि आपके मन में अभी विशेष क्या चलता है ? तो सभी मुस्करा रहे थे। तो दादी से खास बाबा ने पूछा कि आपके मन में क्या संकल्प चलता है ? तो दादी ने कहा कि बाबा हमने नहीं समझा था कि इतना समय एडवांस पार्टी में रहेंगे। हम समझते हैं कि अभी जल्दी होना चाहिए। चन्द्रमणि दादी और दीदी ने कहा कि बाबा हम लोगों को तो साकार का अनुभव है, तो प्लैन बहुत अच्छे बनाते हैं लेकिन प्लेन बुद्धि बनें, इसकी आवश्यकता है। तो दीदी ने कहा कि बाबा हम भी समझते हैं कि जल्दी होना चाहिए, लेकिन कमी यह है जो प्लैन बहुत अच्छे बनाते हैं, धारणा के भी प्लैन बनाते हैं, उमंग-उत्साह में भी बहुत अच्छे आते

हैं, वायदा भी अच्छे करते हैं, यह करेंगे, यह करेंगे.. सोचते भी हैं, उस समय इन्हों का दिमाग ऐसे चलता है कि कुछ करके ही छोड़ना है लेकिन फिर कोई न कोई छोटी-छोटी बातें हरेक को विघ्न डालती हैं। तो बाबा ने कहा फिर आप लोग क्या करते हैं ? तो दादियों ने कहा कि बाबा आपने हमको तो बच्चा बना दिया है। हमको तो उनके आगे बच्चे रूप में ही रहना पड़ता है लेकिन जब हम आपके पास वतन में इमर्ज होते हैं तो हमको संकल्प आता है कि इन्हों से बाबा कोई न कोई संकल्प दृढ़ करावे। हमने समाचार सुनाया कि आज मधुबन में इतनी सब टीचर्स आई हैं। तो दादियों ने बाबा को कहा कि बाबा इन्हों से दृढ़ संकल्प कराओ, हर एक स्वयं को देखे कि मेरे पुरुषार्थ में क्या कमी है। जानते हुए भी कहते हैं यह तो चलता ही है, कौन सम्पूर्ण बना है, अभी तो पुरुषार्थी हैं... ऐसे सोचकर डोंट केयर हो जाते हैं। तो यह जो संस्कार है अब इसे मिटायें। तो बाबा ने उनसे पूछा कि आप लोग इसके लिए क्या करते हो ? तो कहा हम जब 4 बजे आते हैं तो आपसे मिलते हैं। आपसे भविष्य में क्या करना है उसकी प्रेरणा मिलती है, उसके लिए ताकत लेते हैं लेकिन हमारा यहाँ संकल्प बहुत चलता है कि आखिर यह कब तक होगा!

तो बाबा ने कहा कि आप सभी का अगर बाबा से, दादियों से प्यार है तो जिससे प्यार होता है उस पर कुर्बान जरूर होते हैं। तो आज हर एक अपनी गलती को स्वयं समझें और परिवर्तन करे। अगर दूसरा कोई कहता है तो पुराना स्वभाव इमर्ज हो जाता है। लेकिन अपने आपको साक्षी होकर देखे कि मेरे में क्या कमी है! ऐसे नहीं कि यह तो सब चलता है, सब होता है.. ऐसे न करके हर एक समझे कि मुझे बाबा का कहना मानना है। मैं एक दो को न देखूं। बाबा से प्यार है उसमें तो सभी दो दो हाथ उठाते हैं। तो जब बाबा से प्यार है, तो बाबा जो कहता है उससे भी तो प्यार होना चाहिए ना। बाबा को तरस भी आता है कि इस बच्चे का जो विघ्न है, उसको किसी भी रीति से खत्म कर दूं, लेकिन यह बाबा कर नहीं सकता। बाबा सकाश देगा, मदद करेगा लेकिन करना तो उसको पड़ेगा ना। तो बाबा ने कहा कि अभी देखो आपकी दुनिया में क्या चल रहा है ? दृढ़ता ही चल रही है ना। मरे तो मरे, लेकिन जो कहा है वह करना ही है। वह मरने के लिए तैयार हैं, आप जीते जी मरने के लिए तैयार हो जाओ। जो भी कमी है उसको खत्म करना ही है, यह दृढ़ संकल्प चाहिए। तो तीनों दादियों ने कहा बाबा हम भी अमृतवेले यहाँ आकरके इसके लिए विशेष 10 मिनट का योग करेंगे, जिससे हमारे साकार में जो साथी हैं, जिनको करना है, वह जल्दी से जल्दी अपनी कमी खत्म करके समान बन जाएं। आज तीनों दादियां इतने उमंग में थी, जो तीनों के हाथ उठ रहे थे कि बाबा यह ऐसे करें, ऐसे करें... तो बाबा ने कहा कि बच्चों को सुना देना कि दादियां क्या चाहती हैं! दादियों से प्यार है तो प्यार का रेसपान्ड है, जो कहा वह करें। तो यह अटेन्शन देकर अपने से यह प्रण करो। लिखकर तो देते हैं लेकिन चिटकी चिटकी रह जाती है और गलती चिपकी ही रहती है, खत्म नहीं होती है। तो बाबा ने कहा कि यह जो ग्रुप आया है यह कर सकता है। छोटे भी सुभानअल्ला होते हैं। तो यह ग्रुप ऐसा जलवा दिखाये कि बाबा हम करके समय को समीप लाकर ही दिखायेंगे।

फिर बाबा ने सभी एडवांस पार्टी वालों को सामने बुलाया और सबको कहा कि अभी आप भी समझो कि हमें भी इन्हों को सकाश देनी है। अभी यह मन्सा सेवा करो, आप ब्राह्मण भी ब्राह्मणों को सकाश दो जो इनके मन में बुराई से ऐसी घृणा आ जाये जैसे कोई किचड़ा मैं उठा रही हूँ।

ऐसे कहते बाबा ने कहा देखो आज दादी के प्रति कितना भोग आया है। दादी से सभी का विशेष प्यार है ना! दादी से प्यार करते हैं तो आप सबकी भी याद आती है। तो बाबा ने कहा अभी दीदी सबको भोग खिलावे, तो सब प्रकार का भोग थोड़ा-थोड़ा दीदी ने सबको खिलाया। दादी भी साथ में थी। अच्छा - ओम् शान्ति।